विचार बिन्दु

चापलूस आपको हानि पहुंचा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करना चाहता है। -हरिऔध

सिन्धी समुदाय पूछ रहा है सबकी बनी, उनकी अकादमी क्यों नहीं बन रही!

सिन्धी एक ऐसा समुदाय है जो देश के बंटवारे के वक़्त अपनी जमीन से पूरी तरह बेदखल हो कर भारत आया और यहां केवल मात्र अपने श्रम से अपनी जड़ें बनाई और खुद को फिर से जमाया तथा प्रतिष्ठित किया। मुल्क के बंटवारे के दौरान वे अपनी जन्मस्थली सिंध में अपना सब कुछ छोड़ कर आये। मगर अपने साथ एक भरी-पूरी सांस्कृतिक विरासत लेकर आये। सिंध और मारवाड़ का हजारों साल पुराना रिश्ता रहा है। इसीलिए सिन्धी अपने घरों से बेदखल होकर भारत के अन्य हिस्सों के साथ राजस्थान में आकर सहज ही बस गए। रियासतों से मिल कर बने आधुनिक राजस्थान के निर्माण में इस समुदाय के लोगों ने भी वैसे ही अपना पसीना बहा कर अपना योगदान दिया है जैसा यहां के अन्य वासियों ने दिया है। विस्थापित होकर आये सिंधियों ने अपने छोटे-छोटे श्रम से अपना गुज़ारा शुरू किया और बड़े बने। उन्होंने कारोबार में ही अपना वर्चस्व नहीं बनाया बल्कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में, जिनमें कला, संगीत और साहित्य भी शामिल है, अपनी उपस्थिति दर्ज की है। लेकिन कैसी विडंबना है कि आज यह समुदाय शासन से अपने को उपेक्षित महसूस कर रहा है। किसी भी संस्कृति के बनने और उसे परवान चढ़ने में उसकी भाषा का महत्वपूर्ण स्थान होता है। सिंधियों की भी अपनी भाषा है और उसमें उनका समृद्ध साहित्य है। चालीस साल पहले राज्य सरकार ने इस समुदाय की भाषा को बचाए रखने और उसके साहित्य को बढ़ावा देने के लिए सिन्धी अकादमी की स्थापना की थी। आज वह अकादमी निष्क्रिय पड़ी है।

इस साल के अंत में होने वाले विधानसभा चुनावों की चिंता करते हुए सरकार ने पिछले दिनों अकादमियों के अध्यक्ष तथा अन्य सदस्य धड़ाधड़ नियुक्त किये हैं। सबको खुश किया गया है मगर सिन्धी अकादमी पर अब भी सरकारी अधिकारी प्रशासक बिठाया रखा गया है। इस भाषा के साहित्यकार पूछ रहे हैं कि सरकार की इस सौतेली नीति का क्या सबब है? हालांकि अकादमियों को सशक्त करने और उन्हें स्वतंत्र रूप से काम करने के लिए सक्षम बनाने में सत्ता चला रहे आज के नेताओं में कोई रुचि नहीं होती। कोई दिलचस्पी होती भी है तो वह अपने मरजीदानों को उपकृत करने तक सीमित रहती है। इसीलिए अकादमियों के गठन की याद शासन को चुनावी वर्ष के आस-पास ही आती है। सिन्धी अकादमी आठ फरवरी 2019 से प्रशासक के अधीन चल रही है जो भारतीय प्रशासनिक सेवा का अधिकारी होता हैं। 2019 से अब तक जो भी इसके प्रशासक रहे हैं उनका सिन्धी से दूर का भी कोई वास्ता नहीं रहा है। इससे इस भाषा और साहित्य से जुड़े लोगों की पीड़ा का अंदाजा लगाया जा सकता है। और यह भी अनुमान लगाया जा सकता है कि सत्ता में बैठे जन नेताओं की सिन्धी भाषा, साहित्य, कला एवं संस्कृति के विकास और उसके संवर्द्धन के लिये कितनी रुचि है। इस अकादमी की स्थापना 1978 में सिन्धी भाषा, साहित्य, कला एवं संस्कृति के विकास एवं संवर्द्धन के लिये एक स्वायत्त शासी संस्था के रूप में की गई थी। अकादमी की वेबसाइट पर कहा गया है कि अकादमी की स्थापना का मुख्य उद्देश्य 'विलुप्त हो रही सिन्धी भाषा, कला, साहित्य एवं संस्कृति का व्यापक प्रचार-प्रसार करना है।' इसका मतलब यह हुआ कि विधान के अनुसार इस अकादमी का संचालन नहीं करना विलुप्त हो रही इस विरासत को बचाने के प्रति सरकार की उदासीनता है। इसके विधान के प्रावधानों में अकादमी का संचालन राज्य सरकार द्वारा मनोनीत अध्यक्ष, सदस्यों एवं सहवरित सदस्यों की एक साधारण सभा द्वारा किया जाने की व्यवस्था है। मगर जहां अन्य सभी अकादमियां गठित करके सरकार ने वाह-वाही लूटी है और देश में पहली बार एक नई 'बाल साहित्य अकादमी' का भी गठन किया है वहीं राज्य की एकमात्र सिंधी भाषा अकादमी का गठन नहीं किये जाने पर सिन्धी समुदाय में खेदयुक्त उदासी हो व्याप्त है। यह किसी को बताने की जरूरत नहीं कि सिंधी साहित्य में खूब काम हुआ है और आज भी हो रहा है। इसमें यदि शासन का सहारा मिल जाए तो यह और अधिक समृद्ध हो सकता है जिसकी आकांक्षा रखते हुए राज्य का सिन्धी समुदाय सरकार की तरफ देख रहा है। प्रशासक की जगह इस अकादमी के विधिक तरीके से गठन करने की मांग करते हुए मुख्यमंत्री और शिक्षा मंत्री को अनेक ज्ञापन राज्य के कई शहरों से भेजे गये हैं। साहित्यकारों ने भी इस बारे में सरकार में बैठे लोगों को चिट्ठियां लिख-लिख कर कई बार ध्यान खींचा है। सिन्धी के साहित्यकार और समाज के प्रबुद्ध लोग अब सार्वजनिक रूप से दुख और रोष जता रहे हैं कि इस मुद्दे पर किसी भी स्तर पर उनकी कोई नहीं सुन रहा है। मात्र आश्वासन दिए गये हैं, और वे पूरे नहीं किये गए हैं। उनका कहना है कि एक तरफ अन्य अकादमियां सक्रिय की जा चुकी है मगर सिन्धी अकादमी की कोई सुध नहीं ली जा रही है। उदयपुर स्थित हिन्दी साहित्य अकादमी में तो गठन के पहले के तीन बकाया पुरस्कार, सम्मान देने की व्यवस्था तक को सरकार ने मंजूरी दे दी है। ऐसे में सिंधी साहित्यकारों के प्रति यह उपेक्षा किसी को समझ में नहीं आ रही है। एक तो अकादमी में अध्यक्ष नहीं फिर सचिव भी सिंधी भाषी नहीं जिस कारण अकादमी के बजट से सिर्फ खानापूर्ति की जा रही है। यह दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति है। सिन्धी समुदाय को ऐसे में यह लगने लगे कि इसके पीछे कोई सिंधी भाषा विरोधी निहित स्वार्थ की भावना काम कर रही है तो क्या आश्चर्य है। वरना क्या पूरे प्रदेश में एक भी सिंधी भाषी योग्य व्यक्ति उपलब्ध नहीं जो इस संस्था के अध्यक्ष पद पर नियुक्त किया जा सके? सिन्धी समुदाय को भी अपनी भाषा और साहित्य को बचाने और उसे बढ़ाने के संवैधानिक अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता। यह सरोकार सिर्फ सिंधी भाषियों की भावना का ही नहीं बल्कि हर उस व्यक्ति के लिए है जो भेदभाव, अन्याय तथा जनतांत्रिक मूल्यों में यकीन रखता है। इसलिए सिंधी भाषी ही नहीं हिंदी और राजस्थानी भाषा और साहित्यकार से सरोकार रखने वाले प्रबुद्धजनों की भी यह वेदना और सरोकार होना चाहिए, और सबको मिल कर सरकार पर दबाव बनाना चाहिए कि सिन्धी अकादमी को वैसे साकार किया जाए जैसी उसके विधान में दर्शाया गया है। नये बजट में भी सिन्धी अकादमी के साथ भेद भाव का अंदाज ही सामने आता है जब हम पाते हैं कि उसमें इस अकादमी के लिए केवल 55 लाख रुपयों का बजट रखा गया है जो उसके कर्मचारियों के वेतन में ही खप जाने वाला है और उसके विधिक प्रावधानों के अनुरूप काम करने के लिए कुछ भी नहीं बचने वाला है।

जहां अन्य सभी अकादमियां गठित करके सरकार ने वाह-वाही लूटी है और देश में पहली बार एक नई 'बाल साहित्य अकादमी' का भी गठन किया है वहीं राज्य की एकमात्र सिंधी भाषा अकादमी का गठन नहीं किये जाने पर सिन्धी समुदाय में खेदयुक्त उदासी ही व्याप्त है।

इस अकादमी के काम इसके विधिक प्रारूप में ही लिखे हुए हैं और स्वाभाविक ही पूछा जा सकता है कि जिन उदात्त महत्वाकांक्षाओं के साथ इसका गठन किया गया था क्या वे इस सरकार की नज़र में गौण हो गए हैं? इसके संविधान में सिन्धी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अध्ययन एवं अनुसंधान को प्रोत्साहन और बढावा देने के अलावा राज्य में स्थित सिन्धी संस्थाओं/संगठनों के कार्यो में समन्वय एवं सहयोग स्थापित कराने का काम बताया गया है। साथ ही समाज में प्रतिष्ठित पुरूष और महिलाओं को पत्रों के माध्यम से साहित्य के क्षेत्र से जुडी संस्थाओं आदि को प्रोत्साहन एवं सहयोग प्रदान करना और ऐसी साहित्यिक संस्थाओं की स्थापना करना भी इसका काम है। इसके अलावा राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर सिन्धी भाषी विद्यालयों द्वारा आयोजित साहित्यिक गोष्ठियां, सम्मेलनों के विचार धाराओं का आदान-प्रदान करने की प्रक्रिया को बढावा एवं प्रोत्साहन देना, साहित्यिक पत्र-पत्रिकाओं, यहां तक कि पुस्तकों और शोध पत्रों को सिन्धी भाषा में छपवाना, संबंधित सिन्धी संगठनों के लिये लाइब्रेरी व रीडिंग रूम की स्थापना करना व लाइब्रेरियों, विद्यालयों व सार्वजनिक वाचनालायों को पुस्तकें व मैगजीनें उपलब्ध कराना इस अकादमी के काम बताए गए हैं। किन्तु प्रशासक व्यवस्था में सभी काम बरसों से ठप्प पड़े हैं। राजस्थान सोसाइटीज रजिस्ट्रेशन एक्ट 1978 के तहत सिन्धी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में कार्य करने वाली संस्थाओं को मान्यता देना तथा जो सिन्धी भाषा, साहित्य व कला संस्कृति के विकास के लिये कार्य करें उन्हें आर्थिक सहायता देना भी इस अकादमी को विधिक अनुदेश है। ये सब अनुदेश महत्वहीन और बेकार हो जाते हैं जब अकादमी का उसके संविधान सम्मत गठन ही न हो। ऐसे में सिन्धी किताबों, प्रदर्शनियों, मुशायरों और साहित्यिक कार्यक्रमों के माध्यम से देश में सांस्कृतिक और साहित्यिक सम्पर्क स्थापित करने की तो सोची ही नहीं जा सकती। इस अकादमी के संविधान में यह भी निर्देश हैं कि वह योग्य और अनुभवी लेखकों, कवियों और बुद्धिजीवियों को स्कॉलरशिप, फैलोशिप तथा पुरस्कार आदि प्रदान करेगी, सिन्धी भाषा के लेखकों और कवियों को उनके उल्लेखनीय योगदान के लिये मान्यता प्रदान करेगी तथा उनके साहित्यिक कृतियों के प्रकाशन के लिये धन उपलब्ध करवाएगी। इसके अलावा व्याख्यान, सेमीनार, सम्मेलनों तथा सर्वेक्षणों के आयोजनों के माध्यम से सिन्धी भाषा और साहित्य का उत्थान करने का भी इसके विधान में जिक्र है। मगर यह सब बातें हैं बातों का क्या वाली बात हो रही है। लोकतंत्र में प्रत्येक नागरिक को यह अधिकार है कि वह अपनी निर्वाचित सरकार से जवाब मांगे। और यह जवाब आज सिन्धी समुदाय के साहित्यकार मांग रहे हैं। सरकार मौन रह कर इस प्रश्न से अपना पल्ला नहीं झाड सकती। यह समूचे सिन्धी समुदाय संवैधानिक अधिकार का हनन और उनका अपमान है।

-अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक

एक गोपालक बनाम गौ रक्षक - संवाद
(एक व्यंग्य)

महावीर सिंह

एक रोज सुबह सुबह दो-तीन पैनी मूछो वाले गमछाधारी नोजवान, साथ में डंडाधारी 3, 4 मुस्टंडे लेकर एक किसान के खेत पहुंच गए।

एक नें किसान के घरवाली से तेज आवाज में पूछा-'खेता कहाँ है? जरा इधर भेज।'

कुछ ही देर में घुटनो तक की फ़टी धोती पहने, नंगे पैर खेता आया। शहरी लगने वाले साहबजादों से झुक कर राम राम कह अभिवादन किया और किस काम से आए, यह पूछा।

एक नोजवान नें कहा, खेता तेरी शिकायत है कि तूँ तेरी बूढी गाय को आवारा छोड़ देता है, वह है दूसरों के खेतों में नुकसान करती है, गलियों में फूड़ा करते घूमती है। उसको बांध के रखो, उसका ख्याल रखो, चारा-पानी दो। समझे, दुबारा यह कहने के लिए हमे नहीं आना पड़े,वरना----तिरछी मुछों, मुर्क पहने युवक ने कहा---अच्छा नहीं होगा।

खेता नें पूछा क्या हुक्म थाने से पधारे है? मुस्टंडे नोजवान नें कहा, नहीं, साहब लोगों का अलग दफ्तर है। साहब लोग गायों की सुरक्षा, साल-सम्भाल का काम करते हैं। आवारा पशुओं की आने वाली शिकायतों की सुनवाई करते है।

किसान नें कहा, अच्छा तो पशुओं वाले डॉक्टर साब के दफ्तर से हैं। मुस्टंडा फिर बोला, नहीं-नहीं, साहब लोगों का महकमा अलग है, सबसे अलग, बड़ा, समझे।

किसान के घर आए मेहमानों के लिए किसान के घर वाली 5, 6 ग्लास छाछ ले आई।

वे जब छाछ का आनंद ले रहे थे तब किसान नें कहा, साहब आवारा पशु तो सब इधर-उधर आते-जाते ही है। मेरे ही खेत में रात और दिन आवारा पशुओं की डार की डार आती रहती है। पास में कोई गोशाला तो है नहीं, क्या इलाज है? ओर सुनते है कि गोशाला वाले भी मुफ्त में पशु नहीं रखते।

गमछाधारी युवक नें जरा जोर से कहा--इलाज है। अपने बूढ़े, बांजडू पशुओं को घर में बांध कर रखो।

भोला किसान फिर बोल पड़ा, साहब लोगो, आवारा-गैर दुधारू बांजडू पशुओं को बंधे-बंधे कोन खिला सकता है?

बाहर से आए युवकों ने एक साथ कहा--इन गो माताओं का दूध-दही-घी नहीं खाया--दूध बेच कर परिवार नहीं पाला? अब दूध नही दे सकती तो डंडे खानें छोड़ दो। यह कहाँ की इंसानियत?

किसान ठहरा भोला, कह बैठा, साहब-पहले तो बांजडू पशु, छोटे बछड़े भी थोड़ी कीमत में बिक जाते थे, थोड़ा सहारा हो जाता था--अब वह तो बंद हो गया, 5-7 साल से--इस कारण अब आवारा पशुओं की संख्या बढ़ गई,क्या करें?

थोड़े तेवर दिखाते हुए दूसरे नोजवान नें तैश में आकर कहा--गोमाता के बारे में जानते क्या हो? धर्म शास्त्रों में इसे गो माता कहा है। 33 करोड़ देवी-देवताओं का इसके शरीर में वास है--जानते हो? अज्ञानी मत बनो। गोमाता की रक्षा करना हमारा धर्म-फर्ज है-समझे?

गोमाता नें आप को क्या कुछ नहीं दिया और अब उसे यों ही नहीं छोड़ सकते।

किसान बोला साहब, मैं तो गिनती के 5-7 देवी-देवताओं के ही नाम जनता हूँ। आप लोग विद्वान है, इसलिए इतने सारे देवताओं को जानते होंगे। अब यह दूध देती नहीं तो अब कहाँ से खिलाऊँ, मैं कोई सेठ थोड़े ही हूँ?

डंडाधरियों के बात जची नही। कहा, कुछ नहीं, धर्म विरुद्ध आचरण नहीं होने देंगे। बूढ़ी गायों, आवारा पशुओं को सम्भाल कर घर में रखना होगा, समय पर चार पानी देना होगा वरना---तुम जानते हो--

इस दल के नेता नें कहा, जानते हो, गाय के तो गोबर, मूत्र सब कीमती है। गोबर से खाद, कंडे, गोकाष्ट बनाओ, बेचो, पैसा कमाओ। ओर गो मूत्र वह तो औषधी है। बिकता है।

किसान को बातें समझ नही आई। बोल पड़ा, हुक्म आप को तो व्यापार करना आता है। मैं मेरी गैर-दुधारू गायें आपको देता हूँ, बिना कीमत--दान में। खूब कमाओ, भगवान आपका भला करेगा। पड़ोसियों के भी सारी नाकारा गाएं आपको दिला दूंगा, बिना टक्के, पैसे।

मुस्टंडे फिर बोले, तमीज नहीं? साहब लोगों से इतनी मूर्खता की बातें कर रहे हो? एक तो कमाई का रास्ता बता रहे है और तुम बातों को हवा में उड़ा रहे हो--नासमझ प्राणी।

किसान ठहरा भोला, फिर बोल पडा- साहब लोगों, यदि गाय पाली है तो बताओ, एक आवारा पशु को खिलाने-पिलाने का क्या खर्च है?

मुस्टंडों नें एक-दूसरे की तरफ देखा और फिर बोले, तुम ही बताओ? किसान नें कहा अगर आधा पेट भी भरूँ तो 60, 70, 80 रुपये का कम से कम खर्चा है, कहाँ से लाऊं?

मेहमानों नें आदेश सुनाया, जो कहा वो करना होगा---किसान बोला, साहब लोगों, आप लोगो बहुत पढ़े-लिखे,धर्म शास्त्रों के ज्ञाता है, देवी-देवताओं-सरकार तक आप लोगों की,बड़ी पहुंच है --

-----//साहब, एक रास्ता बताऊं, इन गायों की सरकार से पेंशन बंधवा दो??//

-महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

खाटू में बाबा श्याम का लक्खी मेला आज से

खाटूश्यामजी, (निसं)। विश्व विख्यात खाटूधाम में बाबा श्याम का वार्षिक लक्खी फाल्गुन मेला बुधवार से शुरू होने जा रहा है। देश के कोने-कोने से लाखों श्याम भक्त बाबा श्याम के दर्शन करने को खाटूधाम पहुंचेंगे। देश की करोड़ों भक्तों की आस्था का केन्द्र खाटूधाम अगले 11 दिन बाबा श्याम के रंग में रंगने जा रहा है। बाबा श्याम के फाल्गुनी मेले के लिए श्री श्याम मंदिर कमेटी, जिला प्रशासन, पुलिस, नगरपालिका प्रशासन ने सम्पूर्ण व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देने में लगे हुए हैं।

- **देश के कोने-कोने से लाखों भक्त बाबा श्याम के दर्शन करने खाटूधाम पहुंचेंगे**
- **श्री श्याम मंदिर कमेटी, पुलिस, पालिका प्रशासन, व्यवस्थाओं में लगे**

सीकर ट्रैफिक डिप्टी विकास कुमार धींधवाल ने बताया कि मेले के दौरान खाटूश्याम आने वाली गाड़ियां मंडा मोड होते हुए पार्किंग की तरफ जाएंगी। जब की वापसी में यह गाड़ियां चौमू पुरोहितान बाईपास, शाहपुरा होते हुए नेशनल हाईवे संख्या 52 पर जाएगी। इसके अलावा यदि किसी रूट पर ट्रैफिक ज्यादा रहता है तो फिर वैकल्पिक रास्तों का उपयोग किया जाएगा। मेले के दौरान पार्किंग स्थल पर करीब 100 से ज्यादा सुरक्षाकर्मी तैनात रहेंगे। खाटूश्यामजी थानाधिकारी सुभाष यादव के मुताबिक पार्किंग में एक बार में एक साथ 10 हजार से ज्यादा गाड़ियां शामिल रहेगा।

हर बार की तरह इस बार भी लक्खी मेले के दौरान 22 फरवरी से 4 मार्च तक रींगस से खाटू तक का 17 किलोमीटर लंबा मार्ग पूरी तरह से नो व्हीकल जोन रहेगा। मेले में इस बार 350 सीसीटीवी कैमरे से पूरे खाटू कस्बे की और आसपास के रास्तों की निगरानी रहेगी। इसलिए कंट्रोल रूम बनाया गया है और साथ ही इन कैमरों की लाइव फीड सीकर के अभय कमांड सेंटर से भी कनेक्ट की गई है। जिससे कि यहां से भी मॉनिटरिंग होगी। साथ ही सबसे बड़ा नवाचार यह है कि इस बार ड्रोन कैमरे से भी पूरे मेले की निगरानी होगी।

ऐसे में यदि कहीं भीड़ ज्यादा बढ़ती है या फिर अन्य कोई परेशानी होती है तो तुरंत वहां स्थिति को काबू में लिया जा सकेगा इसके अलावा करीब चार हजार के लगभग पुलिसकर्मी, एक हजार के लगभग प्राइवेट गार्ड और करीब 1200 से ज्यादा स्वयंसेवक सुरक्षा व्यवस्था में लगे रहेंगे। इसके अतिरिक्त मेले के दौरान कुछ पुलिसकर्मी सिविल ड्रेस में भी तैनात रहेंगे।

इस बार मेले के दौरान डीजे पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया हुआ है। मुख्य मंदिर परिसर में पहुंचने के बाद इस बार श्रद्धालुओं को करीब 7 सेकेंड तक बाबा श्याम का दीदार रहेगा। मेले में हर बार की तरह इस बार भी बाबा श्याम का श्रृंगार कोलकाता बेंगलुरु से आए फूलों से ही होगा। कस्बे में बाबा श्याम के 11 दिवसीय वार्षिक लक्खी मेले को लेकर जिला कलेक्टर डॉ अमित यादव पुलिस अधीक्षक करण शर्मा ने संयुक्त रूप से प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों व सुरक्षा के जवानों की ब्रीफिंग ली। इस बार संपूर्ण मेले को आठ सेक्टर में विभाजित कर ड्यूटी अधिकारी नियुक्त किए गए।

पुलिस अधीक्षक करण शर्मा ने संबोधित करते हुए कहा कि पुलिस कांस्टेबल से लेकर सभी अधिकारी अपने आप को पुलिस अधीक्षक प्रतिनिधि समझते हुए बाबा श्याम के आने वाले श्रद्धालुओं की सेवा करें। सुगमता पूर्वक दर्शन करवा कर उन्हें भेजें जिससे एक अच्छा संदेश लेकर श्रद्धालु अपने शहर व गांव के लिए रवाना हो सके।सुरक्षा के सहायक मेला मजिस्ट्रेट एएसपी रतनलाल भार्गव ने सम्पूर्ण मेला क्षेत्र के आठ सेक्टरों की विस्तार से जानकारी दी।

'पूर्वोत्तर के कार्य तेजी से और सबसे पहले करें!'
-बजट 2023-24 की अंतर्दृष्टि

नौ साल पहले जनादेश मिलने के बाद, माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली सरकार ने "कर्म परमो धर्मः" के दर्शन का अनुकरण किया, जो कठिन परिश्रम और ईमानदार इरादे के साथ कड़ी मेहनत करने से सम्बन्धित है। इस बात से कोई फर्क नहीं पड़ता कि हमारे सामने कितनी कठिन चुनौतियां हैं, भारत को "विश्व गुरु" बनाने के सपने के लिए हम अपने मार्ग पर मजबूती से आगे बढ़ रहे हैं।

पूरे देश ने पिछले 9 वर्षों में व्यापक परिवर्तन देखे हैं- उपेक्षा और संकट की छाया के बीच पूर्वोत्तर का उदय हुआ है और यह क्षेत्र भारत के विकास इंजन के रूप में उभरकर सामने आया है, जिसे अभूतपूर्व प्रयासों और अविश्वसनीय इच्छाशक्ति की एक प्रेरक कथा माना जा सकता है। परिणामस्वरूप, समठा प्रगति और विकास के युग की शुरुआत हुई है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने हाल ही में 2023-2024 का बजट पेश किया है और बजट में प्रस्तावित प्रगति के मार्ग का विश्लेषण; पूर्वोत्तर के दृष्टिकोण के जरिये किया जाना चाहिए। अष्टलक्ष्मी राज्यों की 7 प्राथमिकताओं- समावेशी विकास, अंतिम व्यक्ति तक लाभ, अवसंरचना, निवेश क्षमता, हरित विकास, युवा और वित्तीय क्षेत्र में सुधार- को सप्तऋषि की संज्ञा दी गयी है। निस्संदेह, पूर्वोत्तर राज्यों को इन प्राथमिकताओं से लाभ प्राप्त होगा।

पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास मंत्रालय (डोनर) के लिए 2023-24 के लिए बजट में 5,892.00 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, जो 2022-23 के आरई आवंटन (2,755.05 करोड़ रुपये) से 114 प्रतिशत अधिक है। यह इरादे के अनुरूप कार्य का निर्विवाद और अकाट्यय प्रमाण है। उल्लेखनीय है कि इनमें से पूंजीगत परिसंपत्ति के निर्माण के लिए समर्पित पूंजीगत व्यय के रूप में 4,093.25 करोड़ रुपये (92 प्रतिशत) का प्रावधान किया गया है।

इसके अतिरिक्त, 2014 से, 54 केंद्रीय मंत्रालयों के बजट आवंटन में भी भारी वृद्धि हुई है तथा मंत्रालयों के लिए कार्यादेश है कि वे अपने सकल बजटीय समर्थन का 10 प्रतिशत पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए समर्पित करें। यह अब बढ़कर 94,679.53 करोड़ रुपये हो गया है, जो 2022-23 के आवंटन से लगभग 30 प्रतिशत अधिक है।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के लिए पिछले कुछ वर्षों के वित्तीय प्रोत्साहन को देखते हुए, यह स्पष्ट है कि 2023-24 में 10 प्रतिशत जीबीएस का प्रावधान; 2014-15 के वास्तविक व्यय, जो लगभग 24,819.18 करोड़ था, की तुलना में लगभग 281 प्रतिशत की वृद्धि को दर्शाता है। इस वित्तीय वर्ष के अंत तक पूर्वोत्तर क्षेत्र में लगभग 5 लाख करोड़ रुपये खर्च किए जा चुके होंगे और यह प्रधानमंत्री के पूर्वोत्तर क्षेत्र को दक्षिण पूर्व एशिया के प्रवेश द्वार के रूप में विकसित करने के दृष्टिकोण की पुष्टि है तथा हमारी एक्ट ईस्ट नीति के अनुरूप भी है।

ज़मीनी स्तर पर अधिकतम प्रभाव सुनिश्चित करने के लिए डोनर को लक्षित पैकेज और योजनाओं के साथ राजकोषीय समर्थन प्रदान किया गया है।

प्रधानमंत्री विश्वकर्मा कौशल सम्मान योजना के तहत स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) को समर्थन या जनजातीय समूहों के विकास और उत्थान के लिए प्रधानमंत्री पीवीटीजी (विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह) कार्यक्रम जैसी पहल के माध्यम से हमारी जड़ों को मजबूत करने और विकास के अंतिम सिरे पर खड़े व्यक्ति को सशक्त बनाने पर बजट का विशेष ध्यान; महिलाओं के नेतृत्व वाले स्वयं सहायता समूहों की क्षमता को भी बढ़ावा देगा।

पूर्वोत्तर का कृषि-बागवानी क्षेत्र संभावनाओं से भरपूर है और बजट में इसके उपयोग के लिए कई अवसर मौजूद हैं। पूर्वोत्तर क्षेत्र को सफलता के उदाहरण के रूप में पेश किया जा सकता है और प्राकृतिक खेती के तहत 1 करोड़ किसानों को लाने का लक्ष्य हासिल करने की बात देश को प्रेरित कर सकती है। इसी तरह, कृषि-त्वरक कोष इस क्षेत्र में स्टार्टअप्स की मौजूदा क्षमता को बढ़ावा देगा। इसके साथ ही, कौशल विकास, पर्यटन क्षमता के विकास, डिजिटलीकरण, सतत विकास पर जोर और हरित कार्यक्रम पर हमारा विशेष ध्यान; पूर्वोत्तर क्षेत्र के सतत विकास की दिशा में भारत सरकार द्वारा किए जा रहे मौजूदा प्रयासों का पूरक है।

सुरक्षा और शांति इस क्षेत्र की एक प्रमुख चुनौती थी, लेकिन सरकार के निरंतर प्रयासों और राज्यों के घनिष्ठ सहयोग से, पूर्वोत्तर आज शांति और स्थिरता के एक अभूतपूर्व युग में प्रवेश कर गया है। 2014 के बाद से, इस क्षेत्र में उठावाद की घटनाओं में 74 प्रतिशत की कमी आयी है और 8,000 से अधिक युवा आत्मसमर्पण करने के बाद उज्जवल भविष्य की कामना कर रहे हैं।

इसी तरह, परिवहन व दूरसंचार संपर्क का विकास किसी क्रांति से कम नहीं है। 2014 से पहले सिर्फ असम ही रेलवे से जुड़ा था। अब अगरतला और ईटानगर को भी जोड़ दिया गया है तथा अन्य राजधानियों को भी जल्द ही रेल-सुविधा प्राप्त होगी।

हमारे राष्ट्रीय राजमार्गों के माध्यम से पूर्वोत्तर में निर्बाध सड़क संपर्क सुनिश्चित करने के लिए सरकार 1.6 लाख करोड़ रुपये खर्च कर रही है। हवाई संपर्क के संदर्भ में, पांच पूर्वोत्तर राज्यों- मिजोरम, मेघालय, सिक्किम, अरुणाचल प्रदेश और नागालैंड- से आजादी के बाद पहली बार हवाई उड़ानें भरीं गयीं। भारत सरकार ने 2023 के अंत तक क्षेत्र में पूर्ण दूरसंचार संपर्क की सुविधा प्रदान करने के लिए 500 दिनों का लक्ष्य निर्धारित किया है, जिससे दूरसंचार संपर्क में भी व्यापक विस्तार देखा जा रहा है।

अंतिम और सबसे महत्वपूर्ण पहल है- एक भारत श्रेष्ठ भारत की भावना के साथ लोगों के बीच आपसी संपर्क स्थापित करना और भावनात्मक जुड़ाव को गहरा करना। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में, पूर्वोत्तर का शेष भारत के साथ सांस्कृतिक और भावनात्मक एकीकरण तथा पराया होने की भावना को दूर करना सर्वोच्च प्राथमिकता रही है। युवाओं में सांस्कृतिक जुड़ाव मजबूत करने के लिए अब युवा संगम के तहत युवा सांस्कृतिक आदान-प्रदान यात्राएं आयोजित की जाएंगी। लोगों तक पहुंचने, उनसे बातचीत करने, योजनाओं के कार्यान्वयन की निगरानी करने और मुद्दों को तत्काल हल करने के लिए कम से कम 16 केंद्रीय मंत्री हर महीने पूर्वोत्तर का दौरा करते हैं।

हाल की उत्तर-पूर्व परिषद के स्वर्ण जयंती समारोह में माननीय प्रधानमंत्री का आवन, "पूर्वोत्तर के कार्य तेजी से करें और सबसे पहले करें" (एक्ट फास्ट फॉर नॉर्थ ईस्ट, एक्ट फर्स्ट फॉर नॉर्थ ईस्ट) ही पूर्वोत्तर क्षेत्र की आगे बढ़ने की यात्रा का मूलमंत्र है। अब पीछे मुड़कर नहीं देखना है। बहानों पर कोई विचार नहीं किया जाएगा, क्योंकि वे दिन अब बीत चुके हैं। पूर्वोत्तर के विकास के लिए कदम मजबूती से उठाए जा चुके हैं!

(जी किशन रेड्डी भारत सरकार में पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास, पर्यटन और संस्कृति मंत्री है।)

राशिफल

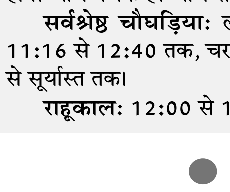

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 22 फरवरी, 2023

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, तृतीया तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2079, उत्तरा भाद्रपद रात्रि 4:50 तक, साध्य योग रात्रि 11:46 तक, तैतिल करण सांय 4:41 तक, चन्द्रमा आज मीन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-मीन, मंगल-वृष, बुध-मकर, गुरू-मीन, शुक्र-मीन, शनि-कुम्भ, राहु-मेष, केतु-तुला राशि में।

आज राजयोग रात्रि 3:25 तक है। रवियोग रात्रि 4:50 से आरम्भ होंगे। आज पंचक है। आज से सायन मु.मास 8 आरम्भ होगा।

सर्वश्रेष्ठ चौघड़ियाः लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:51 तक, शुभ 11:16 से 12:40 तक, चर 3:30 से 4:54 तक, लाभ-अमृत 4:54 से सूर्यास्त तक।

राहूकालः 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 7:02, सूर्यास्त 6:14

मेष
घर/परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। वाणी पर संयम रखना ठीक रहेगा। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से व्यावसायिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। परिवार में शुभ-धार्मिक सम्पन्न हो सकते हैं।

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। धार्मिक कार्यों में भाग लेने का अवसर मिलेगा।

सिंह
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ने का भय बना रहेगा। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त कार्य व्यवस्थित होने लगेंगे। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही परेशानियां दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

धनु
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी।

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है।

कुंभ
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में प्रगति होगी। महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता से मनोबल ऊंचा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।

मीन
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। महत्वपूर्ण कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। नवीन कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा।